

(second time through not so precise...)

```

|-----0-----1-----2-----0-----|
|-----1-----1-----3-----1-----0-----1-----|
|o-----0-----0-----o|
|o-----0-----o|
|--0-----1-----2-----3-----4-----3-----|
|-----|

```

ohhhh..... the simple pleasures
 this ring tells of rain, this one summers

```

---0-----0-----0-----|
---0-----1-----0-----3-----|
-----0-----0-----0-----2-----|
-----0-----|
-4-----3-----4-----|
-----|

```

good dreams, nightmares....

Solo (fret numbers relative to nut not capo!!)

Guitar 1

Em C Am C

Em C Am Bm

While guitar 2 plays this twice:

```

14-14-14-1412-12-12-129-9-9-9--9/109--9 7 5 2--0-|
-----0-|
11-11-11-11 9--9--9--96-6-6-6--6/ 76--6 4 2 0--0-|
-----|
-----|
-----|

```

Em D C

how is it i remember

Em D C

knowing that i would live forever

Em D/F# G D5 C

isn t it strange

Em D C

how truth can change

(second time through not so precise...)

```

|-----0-----1-----2-----0-----|
|-----1-----1-----3-----1-----0-----1-----|
|o-----0-----0-----o|
|o-----0-----o|
|--0-----1-----2-----3-----4-----3-----|
|-----|

```

ohhhh..... the windy weather....
 this ring tells of rain, this one summers

```

---0-----0-----0-----|

```

```
---0-----1-----0-----3---|
-----0-----0-----0---2---|
-----0-----|
-4-----3-----4-----|
-----|
```

dry spells, brushfire....

Guitar 2 starts repeating this riff at this one summers....

```
-0-0-----3-----0-----|
-----3/5-----5-53-----0-----|
-----|
-----|
-----|
-----|
```